स्वच्छ भारत अभियान : सामूहिक प्रयास की आवश्यकता

संजय कुमार पटेल
शोध छात्र समाजशास्त्र विभाग,
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी

स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गाँधी के द्वारा देखा गया था जिसके संदर्भ में महात्मा गाँधी ने कहा था कि ''स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी है'' उनके समय में देश गरीबी, बीमारी, गंदगी से जूझ रहा था। वह जानते थे कि अगर भारत स्वच्छ होगा तो लोगों के स्वास्थ्य में भी सुधार होगा इसी लिए उन्होने भारत के स्वच्छता के लिए काफी प्रयास किया, लेकिन उन्हे उस प्रकार की सफलता नहीं मिली जैसा वह चाहते थे। वह जानते थे कि अगर राष्ट्र को स्वच्छ बनाना है तो उसकी शुरूआत स्वयं से करनी पड़ेगी और उन्होने जीवन पर्यन्त स्वच्छता के लिए प्रयास किया। उन्होने कहा कि निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन के आधार होते हैं। लेकिन दुर्भाग्य से भारत के आजादी के इतने वर्षो बाद भी स्वच्छता के लक्ष्य को पाया ना जा सका। अगर आंकड़ों की बात करें तो केवल कुछ प्रतिशत लोगों के द्वारा स्वच्छता के प्रति सजगता देखी जाती है। भारत के अधिकांश भागों में आज भी शौचालयों का प्रयोग बहुत कम किया जाता है जिसके कारण भी अनेक प्रकार के बीमारियों का आगमन होता है। इसी लिए देश के सभी लोगों को स्वच्छता के इस मिशन में जोड़ने के लिए भारत सरकार स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत स्वच्छता के प्रतीक के रूप में चला रही है। और इस अभियान को मूर्त रूप देने के लिए इसे स्वच्छता अभियान के रूप में जागरूकता विकसित करने के लिए सामाजिक–सांस्कृतिक जागरूकता पैदा करना चाहती है।

स्वच्छता अभियान को प्रारम्भ करने की तिथि से महात्मा गाँधी के 150 वीं जन्म दिवस 2019 तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। इस सामूहिक अभियान को सफल बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा सभी नागरिकों से निवेदन किया गया है कि वह अपने आसपास और दूसरी जगहों पर साल में कम से कम 100 घंटे सफाई के लिए निकाले ताकि हम सभी लोग अपने आस–पास के वातावरण को स्वच्छ व साफ–सुथरा रख सके।



https://www.google.co.in/search?tbm=isch&sa=1&ei=0p4NWuu4HoGe8QWOnbmwAg&q=swach+bharat+abhiyan+in+hindi&oq=swach+bharat+abhiyan+in+hindi&gs_l=psy-ab.3...245778.254782.0.255665.0.0.0.0.0.0.0..0.0....0...1.1.64.psy-ab..0.0.0....0.iJG70mJztGo#imgdii=hp4d33eoWzm20M:&imgrc=DrLhC8Lu_M_QmM:

इस देशव्यापी मिशन को क्रियान्वित करने के लिए तीन चरणों की प्रक्रिया बनायी गई है जिसमे योजना चरण, कार्यान्वयन चरण, और निरंतरता चरण सम्मिलित है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी चाहते है कि भारत गंदगी से मुक्त हो तथा यहाँ के प्रत्येक नागरिक महात्मा गाँधी के सपने को पूर्ण करने में अपनी महत्वपूर्ण सहभागिता दिखाये और अपने घर, गली, मंदिर, बाजार, स्कूल, विश्वविद्यालय को गंदगी से मुक्त कर साफ–सुथरा रखे ताकि हर व्यक्ति का स्वास्थ्य ठीक रहे और भारत विश्व में स्वच्छ देशों के सूची में सम्मिलित हो।

स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्वच्छता मिशन है जो जनभागेदारी पर आधारित भारत सरकार द्वारा चलाया जा रहा कार्यक्रम है, इसके अन्तर्गत भारत के चार हजार इकतालीस सांविधिक नगरों के सड़क मार्ग, पैदल मार्ग, अन्य कई स्थानों को साफ–सुथरा करना है। इस आन्दोलन के द्वारा सम्पूर्ण भारत को 2019 तर्क पूर्णतः साफ–सुथरा बनाना है। यह कार्यक्रम महात्मा गाँधी का सपना पूर्ण करने वाला मिशन है जिसके तहत 2 अक्टूबर 2014 (145 वीं जन्म दिवस) को महात्मा गाँधी के जन्म दिवस के अवसर पर प्रारम्भ किया गया है। और यह कार्यक्रम 2 अक्टुबर 2019 (गाँधी के 150 वीं जन्म

दिवस) तक पूर्ण करने का लक्ष्य रखा गया है। भारत सरकार के शहरी विकास तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत इस अभियान को सम्पूर्ण भारत के ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों मे लागू किया गया है।

इस मिशन का पहला स्वच्छता अभियान (25 सितम्बर 2014) को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा शुरू किया जा चुका है जिसका लक्ष्य सम्पूर्ण भारत में स्वच्छता को बनाये रखना है जो साफ–सफाई अभियानों के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है। इस मिशन के द्वारा मल प्रबन्धन को दुरूस्त कर के शौचालयों का अधिक से अधिक निर्माण कराने का लक्ष्य रखा गया है। इस कार्यक्रम का ब्राण्ड एंबेसडर **अमिताभ बच्चन, सलमान खान, शंकर माधवन, सचिन तेंदुलकर, शिल्पा शेट्टी** जैसे कई जाने–माने लोगों को बनाया गया है इसी प्रकार कई राज्यों ने भी अपने–अपने ब्राण्ड एंबेसडर बनाये हुये है। इस मिशन के द्वारा खुले में शौच को पूर्णतः बन्द करके सरकार द्वारा सहायता प्राप्त करके अधिक से अधिक शौचालय बनवा कर लोगों को जागरूक बनाने का लक्ष्य रखा गया हैं। ताकि भारत के प्रत्येक गाँव–शहर खुले में शौच मुक्त हो कर स्वच्छता कार्यक्रम में अपना योगदान दे, ऐसा प्रयास किया जा रहा है। इस कार्यक्रम में 2019 तक भारत के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों को मिलाकर 'स्वच्छ भारत अभियान' पर पाँच वर्षों मे लगभग दो लाख करोड़ रूपये व्यय किये जायेंगे। तथा शहरी क्षेत्रों में इतने समय मे लगभग 11. 11 करोड़ शौचालय बनाने के लिये 1 लाख 34 हजार करोड रूपये खर्च किये जाएंगे।

शौचालयों के महत्व को दर्शाते हुये भारत के स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर प्रधानमंत्री ने अपने विचार रखे थे जो इस प्रकार है ''क्या हमें कभी दर्द हुआ है कि हमारी माँ और बहनों को खुले में शौच करना पडता है ? गाँव की गरीब महिलाएं रात की प्रतीक्षा करती है, जब तक नहीं अंधेरा उतरता है, तब तक वे शौच को बाहर नहीं जा सकती। उन्हे किस प्रकार की शारीरिक यातना होती होगी, क्या हम अपनी माँ और बहनों की गरिमा के लिए शौचालयों की व्यवस्था नहीं कर सकते हैं?''

स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता

आधारभूत सर्वेक्षण 2013 में राज्यों ने बताया है कि देश में निम्नलिखित स्वच्छता सेवा उपलब्ध कराने की आवश्यकता है–

घटक	संख्या
भारत में कुल घरों की संख्या	17.13 करोड़
आई0 एच0 एच0 एल0	11.11 करोड़*
विद्यालय में शौचालय	56,928
आंगनवाड़ी शौचालय	1,07,695
सामुदायिक स्वच्छता परिसर	1,14,315
(इनमें से केवल 8,84,39,786 ही पात्र# श्रेणी के अंतर्गत है।)	



https://www.google.co.in/search?tbm=isch&sa=1&ei=0p4NWuu4HoGe8QWOnbmwAg&q=swach+bharat+abhiyan+in+hindi&oq=swach+bharat+abhiyan+in+hindi&gs_l=psy-ab.3...245778.254782.0.255665.0.0.0.0.0.0.0.0..0.0....0...1.1.64.psy-ab..0.0.0....0.iJG70mJztGo#imgrc=4jk8XWy8LVGeiM:

योजना के परिवार	
कुल परिवार जिनके लिए आधारभूत सर्वेक्षण में शौचालय की आवश्यकता दिखाई गयी है।	11.11 करोड़
(—) अपात्र ए0पी0एल0	0.88 करोड़
(—) निष्क्रिय	1.39 करोड़
शुद्ध बी0पी0एल0 पात्र एवं ए0पी0एल0 पात्र	8.84 करोड़

इस प्रकार स्वच्छ भारत /निर्मल भारत अभियान के अंतर्गत अगले पाँच सालों में 2019 तक प्रतिवर्ष 177 लाख की दर से 8.84 करोड़ परिवारों को प्रोत्साहन दिया जाना है। इस समय परिवारों में शौचालयों की वृद्धि दर 3 प्रतिशत है जिसे स्वच्छ भारत मिशन के जरिये 2019 तक 3 गुणा से ज्यादा बढ़ाकर 10 प्रतिशत तक की उपलब्धि पर ले जाना है। इस समय 14,000 शौचालयों को प्रतिदिन बनाया जा रहा है। इस योजना में शौचालय निर्माण दर 48,000 तक प्रतिदिन करना है। नाबार्ड/सिडबी के सहयोग से 2.27 करोड़ शौचालय (ए0पी0एल0 श्रेणी के अंतर्गत) और बनाये जाने हैं। इसे अनुनय विनय, सामूहिक दबाव के इस्तेमाल से सूचना, शिक्षा एवं संचार (आई0ई0सी0) एवं अंतर्वैयक्तिक संचार (आई0पी0सी0) उपायों के माध्यम से अंजाम देना है।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान के लिए आवश्यक धन			
क्र0	घटक	कुल राशि*	अभ्युक्ति
1	व्यक्तिगत शौचालय	4,165	2 वर्षों में पूर्ण
2	सामुदायिक शौचालय	655	—तथैव—
3	सार्वजनिक शौचालय	0	पीपीपी जरिए
4	ठोस अपशिष्ट प्रबन्धन	7,366	दूसरे व तीसरे वर्ष में
5	जनजागृति	1,828	90 प्रतिशत कवरेज
6	क्षमता निर्माण आदि मद	14,625	————
*(रू0 करोड़ में) स्त्रोत **www.pib.nic.in**			

इस प्रकार इस कार्यक्रम का उद्देश्य भारत में जनसहभागिता के स्तर को बढ़ा कर भारतीय जनमानस को सामाजिक, मानसिक, भौतिक और बैद्धिक रूप से इस प्रकार तैयार करना ताकि वह अपने आप को स्वच्छता अभियान से जोड़ सके और अपने आस—पास के वातावरण को साफ—सुथरा रखे ताकि अनेक प्रकार के स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का निराकरण हो सके। इस अभियान के कुछ महत्वपूर्ण बिन्दु निम्नलिखित है जो स्वच्छ भारत अभियान के लिए आवश्यक है—

1. भारत के प्रत्येक घरों में शौचालयों की व्यवस्था कराना ताकि भारत के प्रत्येक क्षेत्र खुले में शौच मुक्त हो सके।
2. हाथ के द्वारा की जाने वाली साफ—सफाई की व्यवस्था को पुरी तरह खत्म करना ताकि बीमारियों का प्रकोप कम हो।
3. कचरे एवं मलमूत्र का वैज्ञानिक तरिके से निपटारा ताकि इसका पुनर्चक्रण किया जा सके।
4. प्रत्येक नागरिक के अन्दर साफ—सफाई एवं स्वास्थ के प्रति सामाजिक स्तर पर जागरूकता विकसित करना ताकि पूर्व के परम्परागत विचारों में परिवर्तन हो।
5. शौचालयों के मल को नदियों में बहाने पर रोक।
6. वैश्विक चेतना का निर्माण जागरूकता कार्यक्रमों द्वारा चलाया जाना।
7. साफ—सफाई के कार्यक्रम में निजी क्षेत्र के भागीदारी को बढ़ाना।
8. भारत के प्रत्येक भाग को स्वच्छ एवं हरियाली युक्त करना।
9. ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार करना।
10. स्वास्थ शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से समुदायों और पंचायती राज संस्थानों, नगर निगम को निरन्तर साफ—सफाई के लिए प्रेरित करना और प्रशिक्षण देकर निपुण बनाना।

साफ–सफाई के प्रति महात्मा गाँधी के विचार

महात्मा गाँधी साफ–सफाई के प्रति निरन्तर सजग रहने वाले स्वच्छता के समर्थक थे। वे गंदी सड़कों, रास्तों, मंदिर, स्कूल, विश्वविद्यालय, सार्वजनिक स्थानों आदि को साफ–सुथरा रखने के लिए पुरजोर प्रयास करते थे। वह हरिजन बस्तियों, मलिन बस्तियों, में व्याप्त गंदगी से काफी चिन्तित रहते थे। उन्होने भारत में व्याप्त गंदगी को देख कर यह महसूस किया कि भारत की स्थिति साफ–सफाई के स्तर पर काफी खराब है इसी लिए उन्होने लोगों को साफ–सफाई से जोड़ने एवं प्रेरित करने का संकल्प लिया और स्वयं को भारत में व्याप्त गंदगी को खत्म करने में लगा दिया।

एक बार **महात्मा गाँधी बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय** के लोकार्पण कार्यक्रम में जनसमूह को संबोधित करते हुये स्वच्छता के महत्व को बताया और हर जगह फैली गंदगी को देखकर अपना दर्द तथा दुःख प्रकट किया। उन्होने अपने भाषण में विश्वनाथ मंदिर में व्याप्त गंदगी के बारे में बताया। उन्होने कहा कि क्या ये महान मंदिर हमारे चरित्र को नहीं बताते हैं? उन्होने अपने दुःख को व्यक्त करते हुये जनसमूह से पुछा क्या अंग्रजों के देश से चले जाने के बाद भी मंदिर गंदा और मैला रहेगा। इस लिए उनके लिए सफाई उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी राष्ट्र की आजादी। गाँधी जी चाहते थे कि भारत के प्रत्येक व्यक्ति में साफ–सफाई के प्रति स्वयं की जिम्मेदारी का बोध हो और प्रत्येक व्यक्ति स्वच्छता का अनुसरण करे।

> यदि हम अपने घरों के पिछे सफाई नहीं रख सकतें तो स्वराज की बात बेईमानी होगी। हर किसी को स्वयं अपना सफाईकर्मी होना चाहिए।
>
> **महात्मा गाँधी**

गाँधी जी चाहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति को पहले स्वयं को बदलना चाहिए ताकि वह जो चाहते है उसे पाया जा सके। गाँधी जी स्वयं हर समय जहाँ भी होते थे सफाई के प्रति सजग रहते थे। वह स्वयं अपना कार्य करते थे। उनके दिन चर्या के जीवन में सफाई के प्रति विशेष लगाव प्रकट होता था। स्वच्छता के प्रति लोगों को सजग करने के लिए वह सम्पूर्ण भारत का भ्रमण करते थे वह पूरे देश में लोगों को अंग्रजों के खिलाफ बड़े संघर्ष के लिए तैयार करने के साथ–साथ साफ–सफाई एवं स्वच्छता के महत्व के बारे में भी लोगों को बताते थे। महात्मा गाँधी 1934 में पटना छोड़ कर उड़ीसा गये थे। चंपापुर में उन्होने पाया कि गाँधी सेवा आश्रम के जमीन पर एक चिकित्सालय था, वहाँ उन्होने कहा कि लोगों को साफ–सफाई और स्वास्थ्य के बारे में ग्रामीणों को शिक्षित करने की जरूरत पर जोर देना चाहिए उनके अनुसार, आश्रम का सच्चा कार्य बीमारी से बचाव करने के लिए लोगों को शिक्षित करना था।

गाँधी जी स्वयंसेवक ग्रामीणों के साथ एक विशाल जन–सफाई कार्यक्रम का संचालन करते थे वे स्वच्छता की जरूरत, रहने की जगह को साफ रखने, और व्यक्तिगत स्वच्छता के बारे में बात किया करते थे। गाँधी अपने जागरूकता कार्यक्रम के अन्तर्गत जब आश्रम के निकट मल को मिट्टी से ढ़क देते थे तो ग्रामीण लोग इसे भंगी का कार्य मान कर उसे करने मे पाप महसूस करे थे तब गाँधी जी स्वयं सफाई करते थे वह आदर्श प्रस्तुत करने के लिए स्वयं गाँव–गाँव जाते थे और उसे साफ करते थे। गाँधी जिस आश्रम में रहते थे वहाँ साफ–सफाई का कार्य उनके साथ रहने वाले लोग भी करते थे आश्रम के जमीन पर कोई भी गंदगी या मैला कही भी नहीं पाया जाता था। जहाँ गड्ढा होता था जहाँ सब्जियों के छिलके, और बचे हुए खाने को उसमें डाला जाता था। बेकार पानी का प्रयोग बागवानी के लिए होता था। प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्तव्यों के प्रति सजग होता था। प्रत्येक लोग स्वयंसेवक की भूमिका के द्वारा साफ–सफाई में योगदान देते थे। गाँधी हमेशा अपनी पत्रिका हरिजन में स्वच्छता के महत्व को लिखते थे। इसलिये हमारे राष्ट्रपिता ने न सिर्फ अंग्रजों की दासता के खिलाफ संघर्ष किया, बल्कि स्वास्थ्य और साफ–सफाई को लेकर लोगों के गलत कार्य–प्रणाली के खिलाफ भी लड़े। उन्होंने पूरे जीवन भर लोगों को खुद के और सार्वजनिक स्वास्थ्य को बेहतर रखने के लिए प्रोस्ताहित किया। इसलिये, महात्मा गाँधी को उनके **जन्मदिवस 2 अक्टूबर को सरकार ने ''स्वच्छ भारत अभियान''** की शुरूआत कर अच्छा संकेत और उचित श्रद्धांजलि दी है।

स्वच्छता कार्यक्रमों में गैरसरकारी संगठनों का योगदान

इस दिशा में **सुलभ इंटरनेशनल** (Sulabh International) द्वारा सराहनीय प्रयास किये जा रहे हैं। देशभर में सुलभ शौचालयों की स्थापना कर के हाथ से मैला ढ़ोने की कुप्रथा पर अंकुश लगाया

गया है। **डॉ0 बिन्देश्वर पाठक** द्वारा 1970 में स्थापित शुलभ संगठन जैसे प्रयासों की आज महती आवश्यकता है। प्रधानमंत्री मोदी द्वारा **2 अक्टूबर 2014 को प्रारम्भ** किया गया स्वच्छ भारत अभियान इसी दिशा में किया गया प्रयास है। **'सत्यमेव जयते'** धारावाहिक के माध्यम से फिल्म **अभिनेता आमिर खान** ने इस मुद्दे को आमजन तक पहुंचाया था। इस मुद्दे में जो चीजे रेखांकित किये गये है उसी का निराकरण स्वच्छ भारत अभियान के द्वारा प्रधानमंत्री करना चाहते हैं। शौच मुक्त जिलो का चयन इसी लिये किया जा रहा है कि लोग जागरूक हो तथा अपने निजी संम्पत्ति के साथ–साथ सार्वजनिक सम्पत्ति को भी साफ सुथरा रखें। इस कार्य में **इंडिया वाटर पोर्टल** भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य

2 अक्टूबर 2019 तक **''स्वच्छ भारत मिशन''** को पूरा करने के लिये भारतीय सरकार द्वारा स्वच्छ भारत अभियान की शुरूआत की गई जो कि महात्मा गाँधी का 150वाँ जन्म दिवस होगा, ऐसा अपेक्षित है कि भारतीय रूपयें में 62000 करोड़ अनुमानित खर्च है। सरकार द्वारा यह घोषणा किया गया है कि ये अभियान राजनीति से ऊपर है और देशभक्ति से प्रेरित है। स्वच्छ भारत अभियान के निम्नलिखित महत्वपूर्ण उद्देश्य हैं –

1. भारत में खुले में मलत्याग की व्यवस्था का जड़ से उन्मूलन।
2. साफ सुथरे शौचालयों का निर्माण कराना ।
3. हाथों से मल की सफाई करने की व्यवस्था को हटाना।
4. लोगों के व्यवहार में बदलाव कर अच्छे स्वास्थ्य के विषय में जागरूक करना।
5. जन–जागरूकता पैदा करने के लिये सार्वजनिक एवं निजी स्थानों की साफ–सफाई के कार्यक्रमों से लोगों को जोड़ना।
6. प्रत्येक व्यक्ति को साफ–सफाई के प्रति संचेत करना।
7. ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में शौचालय निर्माण में मदद करना।

निष्कर्ष :–

स्वच्छता कार्यक्रमों से राष्ट्र के लोगों के स्वास्थ्य में काफी सुधार लाया जा सकता है अगर हमारे आस–पास का वातावरण साफ–सुथरा रहेगा तो लोगों को कई प्रकार के बीमारियों से मुक्ति मिलेगी। लोग स्वस्थ्य रहेंगे तो समाज में खुशहाली आयेगी तथा प्रत्येक नागरिक अपना जीवन स्वच्छता के साथ जी सकता है जो उसका अधिकार है। अतः हम सभी देशवाशियों को राष्ट्र हित में स्वच्छता कार्यक्रमों में भागीदारी बढ़ानी चाहिए तथा भावी पीढ़ी को स्वच्छ वातावरण उपहार स्वरूप देना चाहिए। यह हमारे आने वाले पीढ़ियों का अधिकार है, और हमारा उनके प्रति कर्तव्य है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची–

1. शर्मा, जी0एल0 (2015), सामाजिक मुद्दे, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान, पृष्ठ संख्या – 50
2. अहुजा, राम (2000), सामाजिक समस्यायें, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, राजस्थान
3- योजना, अक्टूबर 2014
4- दैनिक जागरण, 12 अक्टूबर 2017 उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड
5- अमर उजाला, 30 अक्टूबर 2017 अजमेर
6- योजना (हिन्दी मासिक), मई 2017, पृ0 13–14
7- First post Hindi, 15 October 2017, New Delhi
8- https://hi.wikipedia.org
9- www.swachh.mp.gov.in
10- www.sulabhinternational.org
11- hindi.indiawaterportal.org

डॉ0 राधाकृष्णन के शैक्षिक विचार

सिद्धार्थ ओझा
शोध छात्र,
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

विश्व प्रसिद्ध दार्शनिक और विद्वत शिक्षाशास्त्री डा0 राधाकृष्णन एक आदर्श शिक्षक के रूप में जाने जाते हैं। उनके सक्रिय जीवन का एक लम्बा काल शिक्षक और आदर्श आचार्य के रूप में बीता है। अपने चिंतन और व्यवहार में वे आदर्शों के प्रतिमान थे। उनका अध्ययन इतना गूढ़–गम्भीर और चिंतन और व्यवहार, मौलिक एवं गवेषणापूर्ण रहा जिसके कारण वे विश्व में एक अप्रतिम दार्शनिक के रूप में विख्यात हुये। एक लेखक के रूप में उन्होंने प्रभूत साहित्य शिक्षा जगत को अरपा/अध्यात्म और जीवन, शिखा और प्रजातंत्र, रूपात्मक जीवन जीवन मूल्य आदि विविध प्रकरणों और विषयों पर जो कुछ, जितना कछ उन्होंने लिखा वह सब अपने में बेजोड़ और पाठक जगत के लिए अमूल्य विधि सिद्ध हुआ।

उनके प्रारम्भिक वर्षः–

डा0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन 5 सितम्बर 1888 को तिरूत्तानी कस्बे में पैदा हुए थे जो आन्ध्रप्रदेश के समीप और तमिलनाडू के सीमा पर अवस्थित है। इनका परिवार तेलगु भाषा–भाषी रहा। इनके जन्म दिन को ही अपने देश में प्रतिवर्ष शिक्षक दिवस के रूप में मनाया जाता है। इनका शिक्षाविद् रूप असाधारण कोटि का रहा। भारतीय संस्कृति और अध्यात्म दर्शन के ये एक अतिविशिष्ट विवेचक और व्याख्याकार रहे। शिखा के क्षेत्र में इनका योगदान असाधारण रहा। इनका व्यक्तित्व बहुआयामी रहा। एक लोक सेवक के रूप में प्रखर वक्ता के रूप में एक सुप्रसिद्ध लेखक के रूप में उन्होंने भारत राष्ट्र का आदर्श प्रतिनिधित्व किया। उनकी आध्यात्मिक विरासत, उनका संस्कृतिक अवदान, उनका मौलिक दर्शन भारतीय इतिहास में अपना स्थान रखता है। इन सबसे ऊपर वे एक महान मानव थे।

राधाकृष्णन की प्राथमिक शिक्षा स्थानीय प्रारम्भिक विद्यालय में हुई थी। अपने सम्बन्धियों के दबाव में उन्होंने संस्कृत के स्थान पर अल्लामारम विद्यालय में अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्त की, पश्चात् हाईस्कूल की शिक्षा लूथरेन मिशन हाईस्कूल, तिरूपति में प्राप्त की। फिर उन्होंने बेल्लौर कॉलेज में बी0ए0 की शिक्षा अर्जित की। यहॉ उन्होंने सन् 1900 से लेकर सन् 1904 तक अध्ययन किया। इसी क्रम में उन्होंने फिर 1904 से लेकर 1908 सन तक मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज में अपनी एम0ए0 उपाधि की शिखा ग्रहण की। यहॉ उन्होंने दर्शन का गहन अध्ययन किया और अपनी आकांक्षा के अनुसार हिन्दू धर्म की गहन जानकारी की। शिक्षा प्राप्ति के अंदर उन्होंने 'मद्रास प्रेसीडेन्सी'' कॉलिज में सेवा प्रारम्भ की जहॉ उन्होंने अनवरत सात वर्षों तक सेवा की । इसी क्रम में उन्होंने वर्ष 1910 में टीचर्स ट्रेनिंग कालेज, सइंदापेट, अपनी एल0टी0 की परीक्षा उत्तीर्ण की, यहॉ उन्होंने अपने साथियों के बीच तेरह व्याख्यान दिये। वर्ष 1917 में उन्होंने एक वर्ष तक राजा मुन्द्री में सेवा दी। अंग्रेजी भाषा पर विशेष अधिकार के कारण उन्हें अपने अध्यापन में असाधारण सफलता मिली। इसी ख्याति का परिणाम यह हुआ कि उन्हें मैसूर में ''चेयर ऑफ'' फिलासफी के पद को सुशोभित करने के लिये आमंत्रित किया गया। वर्ष 1921 में राधाकृष्णन ने कलकत्ता विश्वविद्यालय में कार्यभार सम्भाला और अपने असाधारण वैदुण्य की छाप डाली। विश्वविद्यालय में उन्हें अपनी कुशलताओं के कारण एक अध्यापक के रूप में बड़ी ख्याति मिली। प्रखर अध्यापन कौशल और भाषण कला के कारण उनके सभी सहयोगी उनसे विशेष प्रभावित हुये, और उनका दार्शनिक रूप निखर चला।

एक प्रखर प्रभावशाली वक्ता के रूप में डॉ0 राधाकृष्णन महान वक्ता थे। इससे सभी श्रोतागण उन पर मंत्रमुग्ध रहे। उनके शब्दों में जादू भरा होता है जिससे सभी श्रोताओं का मन और मस्तिष्क गद्गद ही उठता था। लगभग 1920 के मध्य दशक में उनकी ख्याति यूरोप तक पहुंची और उन्होंने ग्रीक दर्शन पर एक दो विशिष्ट व्याख्यान दिये जिससे श्रोता–समूह विभोर हो गया। उन्होंने यूनेस्को

के अनेक सूत्रों में अपने प्रभावशाली भाषण दिये। यहॉ भी उनकी प्रखर वक्तता की छाप पड़ी। पश्चात् उन्हें आक्सफोर्ड के मैनेचेस्टर कालेज में चेयर ऑफ काम्परेटिव रेलीजन अर्पित किया गया। उन्होंने यहॉ अपने सुप्रसिद्ध व्याख्या दिये, इनसे लन्दन विश्वविद्यालय को कुलपति विशेष प्रभावित हुआ उनके भाषाधिकार की यहॉ अपूर्व सराहना हुई और उन सभी ने माना कि डॉ0 राधाकृष्णन महान भारतीय शिक्षक है। वस्तुतः डॉ0 राधाकृष्णन के सभी व्याख्यान अतीव प्रभावकारी सिद्ध हुए। इस समय तक उनका एक महान दार्शनिक और एक अतिविशिष्ट शिक्षक आचार्य का विश्वविलुत हो चला।

डॉ0 राधाकृष्णन का 'हिन्दुत्व' विषय पर असाधारण अधिकार था। स्वामी विवेकानन्द के बाद डॉ0 राधाकृष्णन अकेले ऐसे महान दार्शनिक थे जिन्होंने 1893 के शिकागो के ''वर्ल्ड कांग्रेस ऑफ रिलीजन'' के महाधिवेशन में अमेरिका और यूरोप के व्यक्तियों को अत्यधिक प्रभावित किया था। इसीलिये ऐसा माना जाता है कि गॉधी ने सर्वोत्तम तरीके से भारत की आत्मा का विश्व में प्रतिनिधित्व किया। जबकि टैगोर ने भारत की संस्कृति का विश्व में सर्वोत्तम तरीके से प्रतिनिधित्व किया वहीं डॉ0 राधाकृष्णन ने भारत की विचारधारा का अखिल विश्व में निःसन्देह सर्वोत्तम ढंग से प्रतिनिधित्व किया।

इस विवेचन को देखते हुये यह अवश्य ही कहा जा सकता है कि डॉ0 राधाकृष्णन अवश्य ही भारत के सर्वाधिक प्रखर वक्ता थे।

डॉ0 राधाकृष्णन जीवन शैली :

डॉ0 राधाकृष्णन विश्व में कहीं की, किसी की विपदा को देखकर दुःखी होते थे। उन्हें ऐसे लोगों से घृणा थी जो धर्म के पीछे भागते थे। उनका मानना था कि धन की यह तृष्णा ही हमारे आज के समाज की अनेक बुराईयों का मूल कारण है–

''Wealth is not all it can not buy the best things - the most desirable possessions : happiness of mind heart continent and goodwill are per your the purchase of money:

राधाकृष्णन की दूसरी विशेषता– उनकी सज्जनता थी वे कभी भी किसी से ऐसा कर्कस नहीं बोलते थे जिससे उस व्यक्ति की भावनाओं को ठेस पहुंचे। वे कभी भी उत्तेजित नहीं होते थे। अपनी महानता के बावजूद वे सदैव अपने आन्तरिक सौजन्य का प्रदर्शन करते थे। अपनी सफलता का हेतु वे अपनी नियति को मानते थे। वे आत्म – प्रचार की ललक से भी कोसों दूर थे। उनके राष्ट्रपति भवन के दरवाजे किसी के लिये भी सदैव खुले रहते थे। लोग अपने दुःख दर्द को उन तक सहजता से पहुंचा सकते थे। वे वादों के पचड़े से दूर थे और निरपृह थे। इस विशेषता के अनुव्यवहार के लिये उन्होंने राष्ट्रपति केनेडी तक को सलाह दी थी । पंडित जवाहर लाल नेहरू भी उनसे प्रभावित थे और समय समय पर प्रसांगानुसार प्रेरणा लेते थे। उनकी एक दूसरी विशेषता उनकी सादगी थी। वे सदैव भारतीय वेशभूषा का प्रयोग करते और अपनी भारतीयता का परिचय देते थे । ''सादा जीवन'' विचार उनके जीवन का सिद्धान्त था।

डॉ0 राधाकृष्णन एक शिक्षाविद् के रूप में :

डॉ0 राधाकृष्णन शिक्षा की व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास की प्रक्रिया मानते है तथा शिक्षा को ऐसा साधन मानते है जो व्यक्ति तथा समाज को सम्मुनत कर एवं विकास की गति प्रदान करें । उनका मानना है कि ज्ञान व्यक्ति के अंदर निहित है। वह स्वभावतः, आत्मबोध करने में सफल है। उनके अनुसार आध्यात्मिक ज्ञान से भिन्न कोई शिक्षा नहीं है। शिक्षा का महत्व यह भी है कि वह हमें दूसरों के साथ सहयोग करने की प्रेरणा भी देती है तथा आपसी सहायता से साथ–साथ रहने का गुण भी विकसित करती है।

डॉ0 राधाकृष्णन के अनुसार शिक्षा की उपयोगिता व्यक्ति एवं समाज दोनों के ही संदर्भ में है। शिक्षा से मनुष्यों को मोक्ष प्राप्त होता है। अतः शिक्षा प्राप्त कर लेने पर व्यक्ति का आचरण, विचार तथा सव्यवहार, सुसंस्कृत हो जाते है। उसका उत्कृष्टतर जीवन श्रेष्ठ समाज के निर्माण में सहायक बनता है। डॉ0 राधाकृष्णन शिक्षा व ज्ञान को एक दूसरे का पर्याय मानते है तथा शिक्षा को विकास के एक साधन के रूप में स्वीकार करते हैं। इनके अनुसार शिक्षा शास्वत जीवन की प्राप्ति का माध्यम

है। शिक्षा के द्वारा नैतिक विकास सम्भव है तथा शिक्षा ही आत्म विकास करने का एक सबल साधन है। शिक्षा के द्वारा ही समाज में सामाजिक–आर्थिक परिवर्तन लाये जा सकते हैं।

डॉ0 राधाकृष्णन शिक्षक को सम्पूर्ण शिक्षा योजना में सर्वाधिक महत्व के पक्षधर है। उनका यह निश्चित मत है कि शिक्षा के उद्देश्यों की प्राप्ति में शिक्षक की भूमिका सर्वाधिक महत्वपूर्ण होती है। उनका मानना रहा है कि युवकों की शिक्षा की कोटि का अनुमान हम उपलब्ध शिक्षकों की कोटि से कर सकते है।

अन्त तोगला शिक्षा का गुण शिक्षक के गुणों पर निर्भर करता है। पंजाब विश्वविद्यालय में दीक्षान्त भाषण करते हुये उन्होंने कहा था कि किसी भी विश्वविद्यालय की महानता गरिमा का निर्धारण उसकी इमारतों या उपकरणों से नहीं क्योंकि विद्यार्थी अध्यापकों से यह आशा करते ो कि वे अपना चरित्र आदर्श रखें, क्योंकि विद्यार्थी अध्यापकों के चरित्र का अनुकरण करते हैं। अध्यापक अपने चरित्र के द्वारा अपने विद्यार्थी के चरित्र का निर्माण करते है क्योंकि विद्यार्थियों के लिये उसका महत्व उतना नहीं है जो पढ़ते हे, अपितु जितना उसका है जो वे है। स्पष्टतः डॉ0 राधाकृष्णन अध्यापकों के आचरण पर सर्वाधिक बल देते है। उनकी दृष्टि में शिक्षकों को ज्ञानी, जिज्ञासु एवं अपने छात्रों से स्नेह रखने वाला होने चाहिये। तभी उन्हें प्रगतिशील विचारों वाला एवं आधुनिक दृष्टिकोण को अपनाने वाला होना चाहिये। तभी वे विद्यार्थियों के जीवन में प्रवेश कर पायेंगें।

निष्कर्षः डॉ0 राधाकृष्णन एक आदर्श और असाधारण शिक्षक थे। उनकी दृष्टि में शिक्षा प्रक्रिया में सर्वाधिक महत्वपूर्ण शिक्षण होता है। शिक्षा, ज्ञानोपार्जन का प्रेमी हो, वह अन्तदृष्टि के विकास का हामी हो और उत्कृष्ट चरित्र तथा जीवन–दर्शन वाला हो। उनकी दृष्टि से शिक्षक का महत्वपूर्ण आधार उसकी विचारशीलता और उसका अध्यात्मवाद है। वे बच्चों की शिक्षा पर बल देते हैं। उनका मानना रहा कि विद्यार्थियों के सामने प्रारम्भ से ही सार्थक जीवन, सामाजिक सेवा, राष्ट्रीय एकता, विश्व बन्धुत्व आदि के उदात्त उपादर्श रहने चाहिये। वे मानते थे कि विद्यार्थियों को ज्ञान और कौशल देने से अधिक महत्वपूर्ण है, उन्हें जीवन के लिये सही दिशा देना। डॉ0 राधाकृष्णन देश की आवश्यकताओं के अनुरूप शिक्षा के प्रतिपादन के हिमायती थे। वे धार्मिक शिक्षा को पाठ्यक्रम का अभिन्न अंग मानते है। प्रादेशिक भाषाओं को शिक्षा का माध्यम बनाने के पक्षधर थे। विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग के अध्यक्ष के रूप में उन शिक्षा का युगानुसार स्वरूपण के लिये उनके सुझाव अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

आशयतः डॉ0 राधाकृष्णन के विचार आज की भारतीय शैक्षिक परिस्थितियों में अतीव प्रासंगिक है। आज के भौतिकता प्रधान जीवन में उनकी सन्देश सर्वथा अनुकरणी और आचरणीय है। आज जबकि चारो ओर आदर्श जीवन मूल्यों का ह्रास हो रहा है। उनके किनारे हमें अवश्य ही अंधेरे से दूर कर सकते है। उनका यह विचार कि शिक्षा संस्थायें ही राष्ट्र का निर्माण करती है एकदम सही है।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. B:B Singh, Sandeep Wagh, remembering Dr. Radha Krishna, 19, great, Teacher, Une News 46, (35) Sep. 1-7 2008 Page 8
2. वही पृष्ठ 6
3. डॉ0 रामशकल पाण्डेयः अकेजनल स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स, प्रथम सीरीज पृष्ठ 68
4. डॉ0 राधाकृष्णनः अकेजनल स्पीचेज एण्ड राइटिंग्स, थर्ड सीरीज पृष्ठ 1701
5. वहीः पृष्ठ 169